7

ISSN No. : 2395-4000

प्रयाग-पथ

अक्टूबर-2019

राजेन्द्र कुमार

शब्द और कर्म की समन्विति

प्रयाग-पथ

साहित्य, कला और संस्कृति का संचयन

वर्ष : 5-6, अंक : 1-4-1 (संयुक्तांक), पूर्णांक : 7, अक्टूबर-2019

सम्पादक
हितेश कुमार सिंह

सह सम्पादक
डॉ. नीतू सिंह

लेज़र टाइपसेटिंग
ज़िया कम्प्यूटर्स, 3/11, समीर प्लाजा,
पुराना कटरा, प्रयागराज

मुद्रक
इण्डियन प्रेस प्रा.लि.,
प्रयागराज-211002

मूल्य
एक प्रति : रु. 50.00 (डाक खर्च अतिरिक्त)
संस्थाओं के लिए : रु. 60.00 (डाक खर्च अतिरिक्त)
सदस्यता चार अंक : 300.00 (डाक खर्च सहित)
आजीवन सदस्यता : पाँच हजार रुपये

सम्पर्क
353/183/2, टैगोर टाउन, प्रयागराज-211002, उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 09452790210
ई-मेल : prayagpathpatrika@gmail.com

सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंधन पूर्णतः अवैतनिक/अव्यवसायिक
पत्रिका में प्रकाशित विचार सम्बन्धित लेखकों के अपने हैं, सम्पादक और प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।

स्वामी-सम्पादक-प्रकाशक-मुद्रक हितेश कुमार सिंह द्वारा 353/183/2, टैगोर टाउन, प्रयागराज के लिए इण्डियन प्रेस प्रा0लि0, 36, पन्नालाल रोड, प्रयागराज-02 से प्रकाशित और मुद्रित

अनुक्रम

सम्पादक की ओर से : साहित्य का एक सत्याग्रही व्यक्तित्व

आत्मकथ्य : राजेन्द्र कुमार-1

संग-प्रसंग

लघुता में अवकाश : विश्वनाथ त्रिपाठी-14/कवि-आलोचक राजेन्द्र कुमार : गोपेश्वर सिंह-17

कविता-कोठार

कविता का एक और चेहरा : विजय बहादुर सिंह-20/जिन्हें अभी पथ मिला नहीं उन पावों की आहट हैं राजेन्द्र कुमार : हरीशचंद्र पांडेय-22/कवि के सरोकार और लोहा-लक्कड़ : ओम निश्चल-27/ पत्थर सिर्फ़ पत्थर नहीं, हम सबकी जड़ हो गई ज़बान है-वैचारिक धरातल पर अडिग कविता की सुंदर कविताएँ : लाल्टू-30/जागे अरु रोवै : पी. रवि-33/दृश्य और दृष्टि से संवाद : राजेन्द्र कुमार की कविताएँ : दामोदर खड़से-42/ईमानदार अभिव्यक्ति की कविताएं : अरुण होता-44/अन्तर्दृष्टि की चिंगारियाँ : भरत प्रसाद-49/राजेन्द्र कुमार की कविताएँ : कुछ नोट्स : बसंत त्रिपाठी-53/फ़िर भी यह विषाद निरन्तर क्यों बना हुआ है? : संतोष चतुर्वेदी-59/राजेन्द्र कुमार की कविताओं से गुज़रते हुए : कौशल किशोर-64/साहित्य और रचनात्मकता का अंतर्द्वंद्व : जीतेन्द्र गुप्ता-70/फासीवादी राष्ट्रवाद को ध्वस्त करती कविता : आईना द्रोह : विंध्याचल-76/कम से कम इंसान तो बना ही रह सकूँगा : अवनीश यादव-83/प्रेमगीत के आलोक में जीवनानुभव : नीलाभ कुमार-87

लोचन-आलोचन

बौद्धिक और आलोचक होने की तमीज़ : नित्यानंद तिवारी-92/वैचारिक प्रखरता, सहजता और आत्मीयता की यह त्रिवेणी : विजय कुमार-95/प्रतिबद्धता का विवेक : अवधेश प्रधान-100/राजेन्द्र कुमार का आलोचना-कर्म : मधुरेश-105/यथार्थ और कथार्थ का अंतःसंबंध : जवरीमल्ल पारख-112/आन्दोलनधर्मी आलोचक : राजेन्द्र कुमार : कमलानन्द झा-119/युगबोध की आलोचना भूमि और राजेन्द्र कुमार : विनोद शाही-128/सामाजिक बोध की पहचान और आलोचक राजेन्द्र कुमार : अरूण कुमार-136/आलोचक की प्रतिज्ञाएँ : अनिल राय-141/आलोचक राजेन्द्र कुमार : कुशल की अपेक्षा ईमानदार : विनोद तिवारी-146/राजेन्द्र कुमार होने का अभिप्राय : कुमार वीरेन्द्र-155/राजेन्द्र कुमार की दृष्टि में 'निराला होने का अर्थ' : प्रभाकर सिंह-161/कथार्थ के रास्ते यथार्थ की परख : नीरज खरे-164/राजेन्द्र कुमार : आलोचकीय व्यक्तित्व : सरोज सिंह-169/साधारण में असाधारणता के द्रष्टा आलोचक : राजेन्द्र कुमार : महेन्द्र प्रसाद कुशवाहा-174/यथार्थ और कथार्थ के आलोचक राजेन्द्र कुमार : अर्जुन कुमार-183/मुक्ति-आकांक्षा के पक्षधर आलोचक : राजेन्द्र कुमार : मयंक भार्गव-189

शब्द-समय

समय को उसकी पीठ की तरफ से देखने की कवायद : मिथिलेश-196/अपने समय में होने का अर्थ : संजय गौतम-208

उत्तर कथा

कहानी का पारदर्शी संसार : रोहिणी अग्रवाल-211

रंग-प्रसंग

बैठा हूँ इंतज़ार में : अनिल रंजन भौमिक-218

राजेन्द्र कुमार : एक परिचय-222

सम्पादक की ओर से...

साहित्य का एक सत्याग्रही व्यक्तित्व

साहित्य, संस्कृति और समाज चिंतन के क्षेत्र में, बिना किसी महत्वाकांक्षा के, खामोशी से काम करते रहने को यदि रचनात्मक साधना माना जाए तो ऐसे साधनारत व्यक्तियों के विरल नामों में एक नाम हैं- राजेन्द्र कुमार। उन्होंने अपने को कभी किसी 'हाईप्रोफ़ाइल' में रखने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। यहाँ तक कि अपनी कृतियों के छपने-छपाने के मामले में भी कभी किसी हड़बड़ी या अधीरता में रहे हों, ऐसा देखने में नहीं आया। स्वभाव से संकोची होने को भी उन्होंने अपनी शक्ति ही माना। न प्रकाशकों के यहाँ चक्कर लगाने के मोह में पड़े, न लेखकों के यहाँ दरबार लगाने के। उन्होंने अपने होने की सार्थकता 'साहित्य का फ़कीर' बनने में ही मानी, साहित्य के किसी मठ का महंत बनने में नहीं। उन्होंने केवल अपनी रचनाधर्मिता के बल पर हिंदी जगत में जो स्थान प्राप्त किया है, वह किसी भी साहित्य प्रेमी के लिए एक प्रेरणा है। जब हमने उन पर 'प्रयाग-पथ' का यह विशेषांक निकालने का निर्णय लिया और उन्हें इस बात का सुराग मिला तो उन्होंने- जैसा कि उनका स्वभाव है इसे हमारी भावुकताजन्य चपलता ही समझा। उनका सुझाव था, विशेषांक ही निकालना है तो आज की रचनाविरोधी स्थितियों को लेखकों की नज़र में विशेषरूप से लाते हुए उनकी भूमिका के किसी समसामयिक स्वरूप को स्पष्ट करने के प्रश्न पर विशेषांक को केंद्रित करना चाहिए, मात्र किसी व्यक्ति विशेष पर नहीं। पर इसके बावजूद हमने अपने निर्णय को न बदलने की ज़िद ठानी। इस ज़िद का औचित्य हमारी दृष्टि में यह रहा कि आज के साहित्यिक परिदृश्य में अनेक यशःप्रार्थी और यशसिद्ध लेखकों में जिस आत्ममुग्धता के चलते अनेक व्यामोह और व्याधियाँ व्याप रही हैं उनके विरुद्ध ऐसे उदाहरण पेश किए जाएं कि जिनसे यह प्रमाणित हो कि रचनाकार के रूप में किसी व्यक्ति का अंतिम संबल तो सार्थक रचनाशीलता

में उसका अडिग विश्वास ही होता है।

राजेन्द्र कुमार ने शुरुआत गीतात्मक और छंदबद्ध रचनाओं से की थी। पहला संग्रह 'प्यासे गीत' कानपुर के एक प्रकाशक ने सन् 1959 में छापा था जब वह इंटरमीडिएट के छात्र थे। वह अब अप्राप्य है। उसके समर्पण पृष्ठ पर छपी चार पंक्तियों से पता चलता है कि शुरू से ही उनकी निष्ठा और प्रतिबद्धता का क्या स्वरूप रहा होगा-

रस न माँगा इंदु से मैंने कभी
जल न माँगा सिंधु से मैंने कभी
मैं ऋणी हूँ एक प्यासे बिंदु का
मिल गया था जो अजाने में कभी।

इंदिरा गाँधी द्वारा घोषित आपातकाल के दौरान राजेन्द्र कुमार इलाहाबाद को अपनी कर्मभूमि बना चुके थे। उस दौर की कविताओं का एक संग्रह 'ऋण गुणा ऋण' इलाहाबाद में कथाकार सतीश जमाली ने अपने 'चित्रलेखा प्रकाशन' से 1978 में छापा। बाद में इसका परिवर्द्धित और परिष्कृत संस्करण 'साहित्य भंडार' से 'ऋण गुणा ऋण तथा कुछ अन्य कविताएँ' नाम से छपा। यह संग्रह 'आपातकाल' के दमनकारी स्वरूप के काले पन्नों के ऐतिहासिक रचनात्मक साक्ष्य के तौर पर विशेष चर्चित हुआ।

राजेन्द्र कुमार का अगला कविता-संग्रह 'हर कोशिश है एक बग़ावत' करीब पैंतीस वर्ष के एक लंबे अन्तराल के बाद 2013 में आया। इस संग्रह पर दूरदर्शन, दिल्ली के 'सुबह सवेरे' कार्यक्रम के अन्तर्गत नामवर जी ने एक महत्वपूर्ण बात यह कही थी कि राजेन्द्र कुमार ने 'कोशिश' शब्द को एक नया अर्थ दिया है। यह सिर्फ 'अटेंप्ट' या 'एफ़र्ट' नहीं है। यह एक आशा है, कि अपनी तमाम सीमितताओं के बावजूद कुछ तो शुरू किया ही जा सकता है।

तीसरा संग्रह 'लोहा-लक्कड़' राजेन्द्र कुमार की राजनीतिक चेतना के विकास का प्रामाणिक परिचय देता है। राजेन्द्र कुमार जी के व्यक्तित्व का एक रूप उनके सांस्कृतिक एक्टिविस्ट वाला भी कह सकते हैं कि उनका साहित्य इस अर्थ में सकर्मकता का पर्याय है।

राजेन्द्र कुमार ने आलोचना, कहानी, निबंध, संस्मरण-प्रायः अनेक विधाओं में लिखकर जो विपुल कृतित्व हमें सौंपा है, अभी उसका तिहाई भी प्रकाशित होकर नहीं आ सका है। अभी बहुलांश सामने आना है। लेकिन फिर भी जो प्रकाशित रूप में उपलब्ध हो सका, फिलहाल उसी के आधार पर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व का मूल्यांकन हो सके, इस अंक में हमारी यही चेष्टा रही है। हमने हिंदी जगत के विभिन्न पीढ़ी के रचनाकारों से इस मूल्यांकन में सहयोग की कामना की। हमें खुशी है कि हमारी इस कामना को पूरा करने में पूरे भारत से लेखकों का उत्साहवर्द्धक सहयोग मिला। उन्होंने राजेन्द्र कुमार जी के लेखक व्यक्तित्व के अलग-अलग पक्षों पर पूर्ण मनोयोग से लिखने में तत्परता दिखाई। इस सहयोग में यह भी प्रमाणित हुआ कि राजेन्द्र कुमार जी की रचनाशीलता के प्रति व्यापक सम्मान का भाव रखने वाले रचनाकारों का कितना बड़ा वर्ग है। उन सभी के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। उनके अप्रतिम सहयोग से ही यह अंक इस रूप में आ सका।

यह अंक कैसा बन सका, इस बारे में आपकी राय पाकर मुझे बेहद खुशी होगी।

हितेश कुमार सिंह